हमारे पिता के प्रेम की अवर्णनीय भेंट के पात्र

फ्रेंकलीन के नोट्स

क्रिसमस वर्ष का एक बहुत अच्छा समय होता है क्योंकि यह प्रेम और देने से आरंभ होता है और उन्हीं के विषय में है।

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, **वह इस से प्रगट हुआ** कि परमेश्वर ने **अपने एकलौते पुत्र को** जगत में **भेजा** है कि **हम** उसके द्वारा **जीवन पाएँ।** 1 यूहन्ना 4:8-9

उसने ऐसा क्यों किया?

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से **ऐसा प्रेम किया** कि **उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया**

यूहन्ना 3:16

परमेश्वर को, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद !

2 कुरि. 9:15

अब **यीशु मसीह** का **जन्म** इस प्रकार हुआ : मत्ती 1:18

लूका 1:26 छठे महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत नासरत नामक गलील के नगर में, (27) एक **कुंवारी** के पास भेजा गया जिसकी मंगनी **यूसुफ** नामक एक पुरुष से हुई थी जो दाऊद के वंश का था, और **उस कुंवारी का नाम मरियम था।**

- यह **यशायाह 7:14** में कही भविष्यवाणी का पूरा होना था : इसलिए प्रभु आप ही तुम्हें एक चिह्न देगा: देखो, **एक कुंवारी गर्भवती होगी,** वह एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम **इम्मानुएल** रखेगी।

- यह बताता है कि उसका **जन्म अद्भुत होगा** क्योंकि स्वाभाविक रूप से कुँवारी को बिना किसी पुरुष के बच्चा नहीं हो सकता।

- यह मरियम के **नैतिक चरित्र** को भी बताता है जिसके कारण वह परमेश्वर के **कार्य के योग्य** ठहरी।

- पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि हमारा **नैतिक चरित्र** और जिस तरह हम अपने जीवन को जीते हैं वह हमें किसी विशेष सेवा या घनिष्ठता के संबंध के **योग्य या अयोग्य** ठहरा सकता है।

- पौलुस ने कहा : मैं अपनी देह को मरता कूटता और **वश में लाता** हूँ, ऐसा न हो... मैं आप ही किसी रीति से **निकम्मा ठहरूं।** 1 कुरिन्थियों 9:24-27
- और पौलुस हमसे 2 तीमुथियुस 2:19-22 में कहता है: बड़े घर में न केवल सोने और चांदी के, वरन् लकड़ी और मिट्टी के भी पात्र होते हैं, कुछ तो आदर के लिए और कुछ अनादर के लिए। अतः यदि कोई **अपने को** इन बातों से **शुद्ध रखे** (और यूहन्ना 1:9) तो वह आदर के योग्य, पवित्र, स्वामी के लिए **उपयोगी** और हर भले काम के लिए **तैयार किया** हुआ पात्र होगा।
- 2 इतिहास 16:9 क्योंकि यहोवा की आंखें समस्त पृथ्वी पर फिरती रहती हैं कि जिनका हृदय सम्पूर्ण रीति से उसका है

उसका **नैतिक चरित्र** प्रभु के लिए उसके उत्साह का परिणाम था

इस प्रकार के लोगों की परमेश्वर को तलाश है और ऐसे ही लोग संसार को चाहिए।

(28) और भीतर आकर स्वर्गदूत ने उस से कहा, "हे प्रभु की **कृपापात्री**, सलाम! **प्रभु तेरे साथ है।**"

- परमेश्वर के पुत्र, अर्थात मसीह की माँ होने के चुना जाना निश्चय **बड़ी कृपा की बात** थी।

- **प्रभु तेरे साथ है।"** **वह आपके साथ** भी है और **आपमें** है

  यदि प्रभु आपके साथ है तो सब कुछ संभव है। यीशु ने कहा :

  मैं **तुझे कभी न छोड़ूंगा** और न ही कभी **त्यागूंगा।** इब्रानियों 13:5

(29) इस कथन को सुनकर वह **अत्यन्त घबरा गई** और सोच में पड़ गई कि यह किस प्रकार का अभिवादन हो सकता है। (30) तब स्वर्गदूत ने उस से कहा, "हे मरियम, भयभीत न हो! क्योंकि **तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है।**

- अब दूसरी बार जिब्राइल ने मरियम पर परमेश्वर के **अनुग्रह** की बात की।

- मरियम के चरित्र ने उसे **बड़ी कृपा की स्थिति में** रखा था।

- सबसे **बहुमूल्य** बात जो आप अपने लिए कर सकते हो, वह **परमेश्वर की कृपा को प्राप्त करना** है।

(31) और देख, तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और **तू उसका नाम यीशु रखना।**

- अब वह असामंजस्य में थी, क्योंकि उसका विवाह नहीं हुआ था।

- और उसे बताया गया कि **उसके पिता ने उसे क्या नाम दिया है** : यीशु

  आपके पिता ने भी आपको एक नया नाम दिया है

  (प्रकाशितवाक्य.2:17; यशायाह 62:2; 65:15)

(32) वह **महान्** होगा, और **परमप्रधान का पुत्र** कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा, (33) और वह याकूब के घराने पर **अनन्तकाल** तक राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।

- दाऊद को की गई प्रतिज्ञा का पूरा होना : तेरा **घराना** और तेरा **राज्य** मेरे सामने सर्वदा बना रहेगा। तेरा **सिंहासन सर्वदा** के लिए स्थिर किया जाएगा। 2 शमूएल 7:16-17

- और भविष्यवाणी का पूरा होना : **यशायाह 9:6-7**

  क्योंकि हमारे लिए एक **बालक उत्पन्न** होगा, हमें एक **पुत्र दिया** जाएगा

  "बालक" का आरंभ था, उसका जन्म। लेकिन "एक पुत्र दिया जाएगा" से अभिप्राय यह है कि पुत्र पहले ही अस्तित्व में है।

और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। (7) उसकी **प्रभुता** सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी **शान्ति का अन्त न** होगा, इसलिये वह उसको **दाऊद की राजगद्दी पर** इस समय से लेकर **सर्वदा के लिये न्याय** और **धर्म** के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

(34) मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे हो सकता है, क्योंकि **मैं तो कुंवारी ही हूं**?"

- मरियम बड़ी उलझन में थी और उसने उचित और स्पष्टता के लिए प्रश्न पूछा। एकमात्र तरीका जिससे बच्चा गर्भ में आता है, उसके लिए पुरुष और स्त्री की ज़रूरत होती है।

(35) स्वर्गदूत ने उस से कहा, "**पवित्र आत्मा तुझ पर** उतरेगा और **परमप्रधान** का **सामर्थ्य** तुझ पर छाया करेगा। **इसी कारण** वह **पवित्र पुत्र** जो उत्पन्न होगा, **परमेश्वर का पुत्र** कहलाएगा।

- उसके प्रश्न का उत्तर यह था, “मरियम, तुम इसे ऐसे जानोगी, कि तुम **बिना पुरुष** के गर्भवती होगी।”

जब **पवित्र आत्मा** तुम **पर** आएगा, तो **परमप्रधान** का **सामर्थ्य** वह सब कर सकता है जो वह चाहता है – नया जन्म, नई सृष्टि, चंगाई, नई आँखें, नए अंग, भविष्यवाणी, नई भाषा, ... जो कुछ भी वह चाहता है।

यह सब स्पष्ट और निश्चित रूप से यह बताता है कि :

- यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है- **दिव्य** – पाप रहित, एकमात्र ग्रहण योग्य बलिदान। आदम से नहीं (रोमियों 5:12) *फूटनोट देखें*
- स्त्री से उत्पन्न, एक पुरुष और इस प्रकार एक **मनुष्य**।
- हमारे लिए एक **बालक उत्पन्न होगा**, हमें एक **पुत्र दिया** जाएगा यशायाह 9:6.

देहधारण का भेद – ईश्वरीय का मनुष्य बनना

(38) मरियम ने कहा, “देख, मैं तो प्रभु की **दासी** हूं। **तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो**।” तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

किसी किशोरी के लिए अपने परिवार, अपने मंगेतर और अपने गाँव के लोगों द्वारा यह जानकर कि उसके विवाह से पहले वह माँ बनने वाली है, गलत समझे जाना और त्यागे जाने का सामना करने का अर्थ था, संभवतः पथराव किया जाना..... (व्यवस्थाविवरण 22:22-24).

फिर भी, **बिना किसी झिझक के वह तैयार हो गई** तथा **अपने शरीर** को जीवित, **पवित्र** और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को **समर्पित कर** दिया। (रोमियों 12:1)

यह बहुत बड़ा विश्वास है। पूर्ण भरोसा। अपने जीवन के प्रति प्रभु की इच्छा के लिए सम्पूर्ण वचनबद्धता।

हम सब के चाहने और प्राप्त करने के लिए एक उच्च लक्ष्य।

.....

प्रभु इस प्रकार के बहुत से किशोरों को ढूँढ रहा है ... जिनका मरियम के समान नैतिक चरित्र हो, जो अपने शरीरों को पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को समर्पित कर दें और जो आवश्यकता पड़ने पर अपने मित्रों द्वारा त्यागे जाने के लिए भी तैयार रहें।

.....

मरियम ने **अपने जीवन पर परमेश्वर** की प्रभुता को सच्चे अर्थ में प्रकट करती है : मैं प्रभु की **दासी** हूँ जो यूनानी शब्द δουλος (डुलोस) से अनुवाद हुआ है।

(कुछ बाइबल अनुवादों में इसे सेविका के रूप में भी अनुवाद किया गया है)

दास और **सेवक** के बीच अंतर है।

- **सेवक** से सेवा कराने वाले उनके **स्वामी नहीं होते**
- **दास के मालिक** उनके स्वामी होते हैं। मरियम ने उसके स्वामित्व को स्वीकारा।

यूनानी शब्द इस अंतर को बहुत स्पष्टता से बताता है।

सेवक के लिए यूनानी शब्द: παιδος and διακονος - सेवक या डिकन हैं। **दास** के लिए यूनानी शब्द है: δουλος

यहाँ एक बहुत अच्छा सबक है कि हम सावधानी पूर्वक इन शब्दों का अनुवाद करें।

दास (δουλος) शब्द **व्यवस्थाविवरण** 15:12-17 की ओर संकेत करता है।

"यदि तेरा कोई भाइ-बन्धु, अर्थात् कोई इब्री पुरुष या स्त्री तेरे हाथ बेचा जाए तो वह छः वर्ष तक तेरी **सेवा** करे; परन्तु सातवें वर्ष तू उसे स्वतंत्र कर देना।. . . . (16) यदि **वह तुझ से तथा तेरे घर-बार से प्रेम करता और तेरे साथ सुख-शान्ति से रहता है** और इस कारण वह तुझ से कहे, **कि मैं तेरे पास से नहीं जाऊंगा**, (17) तब तू **सुतारी** लेना, और **उसका कान दरवाज़े** पर टिका कर छेद देना, और **वह सर्वदा तेरा दास बना रहेगा**। ऐसा ही तू अपनी **दासी** से भी करना।

ध्यान दें – इस पद में **दास या दासी** से अभिप्राय यह है कि वह अपने स्वामी की **सेवा करते** रहना चाहते हैं। हम इस निर्णय को लेते हैं।

यही मरियम प्रभु से कहती है। देख, मैं प्रभु की दासी हूँ, **मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।**

- हममें से प्रत्येक को कुछ न कुछ मौखिक वचनबद्धता अवश्य करनी चाहिए ...

वह अपना जीवन उसकी इच्छा के प्रति सौंप रही है, वह नहीं जानती कि इसके प्रति यूसुफ, उसके माता-पिता या गांव वालों की क्या प्रतिक्रिया होगी।

यह तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो (मत्ती 6:10; ; लूका 11:2) का सही अर्थ है। वास्तव में इस प्रार्थना को करने का अर्थ, स्वयं को परमेश्वर के सेवक नहीं अपितु दास के रूप में सौंपना है।

यह अपनी इच्छा, अपनी चाहत, अपनी आवश्यकताओं, अपनी इच्छाओं की चिन्ता न करते हुए, चाहे कठिन हो या सरल, यहाँ तक कि मृत्यु तक **परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण वचनबद्धता** हैं।

पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता का स्वभाव परिवार में था।

मरियम के बेटे ने वही किया, उसने अपने को पिता के हाथों पूर्ण समर्पण कर दिया।
और परिवार का भाग होने के नाते हमें भी यही करने को कहा गया है:

फिलिप्पियों 2:5-11 **अपने में वही स्वभाव रखो** जो मसीह यीशु में था

- **हम में मसीह का मन है**। (1 कुरि.2:16) क्योंकि **मसीह हम में जीवित है** (गलातियों 2:20)
- **तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है**, जो **तुम में है** और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है, और कि **तुम अपने नहीं हो। तुम** मूल्य देकर **खरीदे गए हो**: **इसलिए अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।** 1 कुरि.6:19-20 मरियम ने ऐसा ही किया

- **हम मिट्टी के पात्रों में,** (यीशु मसीह का पवित्र आत्मा) यह धन इसलिए रखा हुआ है कि सामर्थ्य की असीम महानता हमारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर की ओर से ठहरे। 2 कुरि.4:7

- जब आपने विश्वास किया तब आप बोए गए थे और क्योंकि तुमने नाशमान नहीं वरन् अविनाशी **बीज** से, अर्थात् परमेश्वर के जीवित तथा अटल **वचन** द्वारा, नया जन्म प्राप्त किया है जो तुममें बोया गया था (1 पतरस 1:23).

- यीशु मसीह के पवित्र आत्मा ने **हममें जन्म लिया।**

और : "**परमेश्वर प्रेम है**" **प्रेम ने हमारे भीतर जन्म लिया** (1 यूहन्ना 3:22-23; 4:15-17)

और अब, इसलिए कि : **मसीह का प्रेम हमें नियंत्रित करता है** (2 कुरि.5:14)

मैं धैर्यवान हूँ मैं दयालु हूँ मैं ईर्ष्या नहीं करता मैं डींग नहीं मारता मैं अहंकार नहीं करता मैं अभद्र व्यवहार नहीं करता मैं अपनी भलाई नहीं चाहता मैं झुंझलाता नहीं मैं बुराई का लेखा नहीं रखता मैं कुकर्म से आनन्दित नहीं होता मैं सत्य से आनन्दित होता हूँ मैं सब बातें

सहता हूँ मैं सब बातों पर विश्वास करता हूँ मैं सब बातों की आशा रखता हूँ मैं सब बातों में धैर्य रखता हूँ मेरा प्रेम कभी मिटता नहीं। 1 कुरिन्थियों 13:4-8

पवित्र आत्मा से भरे – पात्रों के रूप में – हम प्रभु यीशु मसीह और उसके प्रेम, उसके सामर्थ्य को लोगों पर प्रकट होने की अनुमति दें, ताकि जहाँ कहीं भी हम जाएं या जिससे भी हम मिलें वे उसे जानें, और देखें।

जितने उसे ग्रहण करते हैं, वे जीवन और प्रेम का वरदान पाते हैं।

जब हम स्वयं में उसके जीवन को **पूर्ण रीति से स्वीकार कर** लेते हैं, तो हमारी ओर से कुछ काम करने की ज़रूरत होती हैं : तुम पिछले चालचलन के **पुराने मनुष्यत्व** को **उतार डालो** जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है। और **अपने मन के आत्मिक** स्वभाव में **नए बनते** जाओ, और **नए मनुष्यत्व को पहिन लो** जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की **धार्मिकता** और **पवित्रता** में सृजा गया है। इफि. 4:22-24

जब हम उसके जीवन को अपने आप में **ग्रहण कर लेते** हैं और उसके दास के रूप में उसके प्रभुत्व को स्वीकार कर लेते हैं तो हम कुछ ऐसे प्रतीत होंगे :

फिलिप्पियों 2

(6) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी **परमेश्वर के समान** होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा। (7) उसने अपने आप को ऐसा **शून्य कर दिया** कि **दास** का स्वरूप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया।

- जब हम अधिकार की स्थिति में होते हैं, तो कभी कभी अपने को परमेश्वर के समान, बना लेते हैं, तब तक जब तक हम अपने आप को शून्य करके या "अपने जीवन का आसन" उसे नहीं सौंप देते।

- फिर हम किसी के लिए संघर्ष नहीं करते ... न ही किसी पद को पाने का ... किसी उच्च... या महत्वपूर्ण स्थान को पाने का ... अपने अनुसार चलने या अपने इच्छा पूरी करने का ... यत्न करते। **लेकिन हम दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने और उन्हें सफल बनाने का प्रयत्न करते हैं।**

- हम अपने अहम को त्याग देते हैं ... बहस में जीतना ... आखिरी शब्द कहना। हम केवल "अपने क्रूस को उठाकर" समर्पण कर देते हैं।

यहाँ हम सब के लिए एक अच्छे जीवन को जीने का वचन है:
तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए **एक आदर्श** रखा कि तुम भी **उसके पद-चिन्हों पर चलो।** उसने **न तो कोई पाप** किया और न उसके मुंह से **छल** की कोई बात

निकली। **उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी**, दुख सहते हुए **धमकियां नहीं दीं**, पर **अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया** जो धार्मिकता से न्याय करता है। 1 पतरस 2:21-24

और यशायाह 53:7:

वह **सताया गया** और उसे **दुख दिया** गया, फिर भी **उसने अपना मुंह न खोला**। जैसे मेमना वध होने के समय तथा भेड़ अपने ऊन कतरनेवाले के सामने **शान्त** रहती है, वैसे ही उसने भी **अपना मुंह न खोला**।

यह आपके विवाह को और अन्य लोगों के साथ आपके व्यवहार को पूरी तरह से रूपांतरित कर देगी। प्रत्येक व्यक्ति सुनने के लिए तो तत्पर, बोलने में धीरजवन्त हो (याकूब 1:19)

परमेश्वर चाहता है कि हम **अपने आप को शून्य करने** के द्वारा वह सब बनें जिसके लिए हम सृजे गए हैं और **उसे उसका जीवन अपने भीतर और अपने द्वारा जीने दें।**

- और इस प्रकार क्रिसमस का दान बार – बार दिया जाएगा ...

और : **दास का स्वरूप धारण किया** मरियम के समान

- हम परमेश्वर के लिए **दास** और अन्य सभी के लिए **सेवक** हैं

- अपने पति/पत्नी के प्रति और अन्य सब लोगों के प्रति सेवक के समान रहें

  जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा-टहल कराने नहीं **वरन् सेवा करने** आया

- यह एक नमूना है कि हमें परमेश्वर के राज्य में किस प्रकार रहना चाहिए
  दूसरों की सेवा करने और उनका आदर करने हेतु अपने को शून्य करने के द्वारा

(8) इस प्रकार मनुष्य के रुप में प्रकट होकर **स्वयं को दीन किया** और यहां तक **आज्ञाकारी** रहा कि **मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।**

- यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, (स्वयं में मुझे अपना जीवन जीने देना चाहे) तो **अपने आप का इनकार करे** और **अपना क्रूस उठाकर** (स्वयं को मारकर) **मेरे पीछे चले।** क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिए **अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।** मत्ती 16:24-25

वह उसे पाएगा – उस शांति के साथ जो समझ से परे है और अवर्णनीय आनंद और पूर्ण महिमा के साथ आपको इसके लिए सृजा गया है।

(9) **इस कारण** परमेश्वर ने उसको **अति महान् भी किया,**

जो कोई तुम में **बड़ा बनना चाहे** वह तुम्हारा **सेवक** बने, और जो तुम में **प्रधान होना चाहे** वह तुम्हारा **दास** बने, जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा-टहल कराने नहीं वरन् **सेवा करने** और बहुतों के छुटकारे के मूल्य में अपना प्राण देने आया।

मत्ती 20:26-28

वरन् सेवा करने और **आपको जीवन** देने आया ताकि लोगों के लिए उसके महान प्रेम में यीशु को देखा जा सके।

और उसको वह **नाम** प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, (10) कि यीशु के नाम पर प्रत्येक घुटना टिके, चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे, (11) और **परमेश्वर पिता की महिमा के लिए** प्रत्येक जीभ अंगीकार करे कि **यीशु मसीह ही प्रभु है।**

परमेश्वर को, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद! 2 कुरि. 9:15

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा **प्रेम किया** कि **उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया**, कि **जो कोई उस पर विश्वास करे** वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

उसके पुत्र यीशु मसीह का वरदान और देना आज के दिन तक जारी है।

परन्तु जितनों ने **उसे ग्रहण किया** (परमेश्वर के प्रेम का दान), **उसने** उन्हें **परमेश्वर की सन्तान** होने का अधिकार **दिया,** यूहन्ना 1:12

कितना अद्भुत दान है !

प्रत्येक अच्छी वस्तु और हर एक **उत्तम दान तो ऊपर ही से है,** और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, याकूब 1:17

उसके पुत्र का दान – पवित्र आत्मा का दान – आत्मा के वरदान – अनुग्रह, दया, क्षमा, शांति का दान ... अनंत जीवन का दान ... हर श्वास का दान ... हर धड़कन का दान ... जो भी हमारे पास है ... जो कुछ भी हम हैं ...वह सब हमारे स्वर्गिक पिता द्वारा हमारे लिए दिए गए दान है।

- और -

अन्य लोगों में परमेश्वर के उस अवर्णनीय प्रेम के दान को देने के लिए हम सब को आज्ञा मिली है तथा हमें इसके लिए सशक्त किया गया है।

मैं आपको फिर स्मरण करता हूँ: कि जब आपने विश्वास किया:

तो आप गर्भित हुए और क्योंकि तुमने नाशमान नहीं वरन् अविनाशी **बीज** से, अर्थात् परमेश्वर के जीवित तथा अटल **वचन** द्वारा, नया जन्म प्राप्त किया है जो आप में बोया गया है (1 पतरस 1:23).

यीशु मसीह का पवित्र आत्मा – सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर – परमेश्वर जो प्रेम है – **उसने आपमें जन्म लिया है**

हम उसी मिशन के साथ मरियम के समान - उसे अपने साथ लिए चलते हैं – हम यीशु मसीह के पवित्र आत्मा को लिए चलते हैं – ताकि **इस संसार में उसे जन्म दें**

यीशु ने कहा : जब तक **मैं** जगत में हूँ, तब तक **जगत की ज्योति हूँ।** यूहन्ना 9:5

फिर उसने अपने शिष्यों से कहा : **तुम जगत की ज्योति हो** ... तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें। मत्ती 5:14-16

क्या हम मरियम के समान कह सकते हैं "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूं। तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो।" लूका 1:38

और हम यह स्वीकार करें कि हमें इस अंधकारमय संसार में उसके प्रिय पुत्र को ले जाने और उसको देने वाले "पात्रों" के रूप में चुना गया है।

क्रिसमस इसी के विषय में है

हमारा जीवन इसी के विषय में है

उसके प्रेम का दान जो वर्णन से बाहर है

देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी। 1 यूहन्ना 3:1

खुशियाँ मनाएं, आनंद मनाए और उसके प्रेम के दान – अर्थात उसके पुत्र, यीशु मसीह के लिए धन्यवाद दें।

और अन्य लोगों को उसके प्रेम और जीवन के दान के बारे में बताएं।

सबसे उत्तम और सबसे बड़ा दान जो आप अपने परिवार को, अपने प्रिय जनों को और अपने मित्रों को दे सकते हैं ... वह आप स्वयं हैं ... मरियम के समान कहें

"देख, मैं प्रभु की दासी हूँ

*** दिव्य** – पाप रहित। यदि उसका पिता संसार का होता तो उसका स्वभाव हम सब के समान पापी होता, और फिर वह जगत के पाप उठाने वाला परमेश्वर का सिद्ध मेमना नहीं बन सकता था।

परमेश्वर ने "प्रथम आदम" और "प्रथम मनुष्य" को बनाया और उसने पाप किया, फिर उससे और उसके बाद उत्पन्न हर एक व्यक्ति में उसका वह पापी स्वभाव स्थानांतरित हो गया।

> 1 कुरिन्थियों 15:45 ऐसा ही लिखा भी है, कि "**प्रथम मनुष्य**, अर्थात् **आदम** जीवित प्राणी बना" और **अन्तिम आदम** (अब और कोई नहीं होगा), जीवनदायक आत्मा बना। 47 **प्रथम मनुष्य** धरती से अर्थात् मिट्टी का था; **दूसरा मनुष्य** स्वर्गीय है।
>
> रोमियों 5:12 इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।

परमेश्वर ने “अंतिम आदम” और “दूसरे मनुष्य” को कुँवारी के जन्म के द्वारा रचा, उसमें आदम का पापी स्वभाव नहीं था और न ही उसने कोई पाप किया और इस प्रकार वह एकमात्र ग्रहण योग्य बलिदान ठहरा – **परमेश्वर का मेमना** (यूहन्ना 1:29 & 36)

> 2 कुरिन्थियों 5:21 **जो पाप से अज्ञात था**, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।